Bure Khatime Ke Asbaab (Hindi)

बुरे ख़ातिमे के अस्बाब

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा। ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

म-दनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें राबित़ा न फ़रमाएं।

...राबित़ा :- मजलिसे तराजिम

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

☎ 9327776311 E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

बुरे ख़ातिमे के अस्बाब [1]

आप को शैत़ान ग़ालिबन येह रिसाला (33 सफ़ह़ात) नहीं पढ़ने देगा शैत़ान के ख़त़रनाक ह़म्लों की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अव्वल ता आख़िर इस रिसाले को पढ़ना बहुत ही मुफ़ीद है ।

दुरूदे पाक न पढ़ने का वबाल (ह़िकायत)

मन्क़ूल है : एक शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में सर पर मजूसियों (या'नी आतश परस्तों) की टोपी पहने हुए देखा तो इस का सबब पूछा, उस ने जवाब दिया : जब कभी **मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक आता मैं **दुरूद शरीफ़** न पढ़ता था इस गुनाह की नुहू़सत से मुझ से मा'रिफ़त और ईमान सल्ब कर (या'नी छीन) लिये गए । (سبع سنابل ص ۳۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़्वाब की बुन्याद पर किसी को काफ़िर नहीं कह सकते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? गुनाहों की नुहू़सत किस क़दर भयानक है कि इस के सबब मौत के वक़्त ईमान बरबाद हो जाने का ख़त़रा रहता है । **मक-त-बतुल मदीना** की किताब ''**जहन्नम**

1 : येह बयान 23 रबीउ़ल आख़िर 1419 सि.हि. को शारजा ता आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में रिले हुवा था । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

में ले जाने वाले आ'माल" जिल्द 1 सफ़ह़ा 63 पर है : "सलफ़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن फ़रमाया करते थे कि गुनाह कुफ़्र के क़ासिद हैं।[1]" यहां येह ज़रूरी मस्अला ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि किसी के बारे में **बुरा ख़्वाब** देखना बेशक बाइसे तश्वीश है ताहम ग़ैरे नबी का **ख़्वाब** शरीअ़त में हुज्जत या'नी दलील नहीं और **ख़्वाब** की बुन्याद पर किसी मुसल्मान को काफ़िर नहीं कहा जा सकता नीज़ मुसल्मान मय्यित पर ख़्वाब में कोई अ़लामते कुफ़्रदेखने या ख़ुद मरने वाले मुसल्मान का ख़्वाब में अपने ईमान के सल्ब (बरबाद) होने की ख़बर देने से भी उस को **काफ़िर** नहीं कह सकते।

दुरूद के बदले ﺻ लिखना ना जाइज़ व सख़्त ह़राम है

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : उ़म्र में एक मर्तबा **दुरूद शरीफ़** पढ़ना फ़र्ज़ है और हर जल्सए ज़िक्र में **दुरूद शरीफ़** पढ़ना वाजिब, ख़्वाह ख़ुद नामे अक़्दस ले या दूसरे से सुने। अगर एक मजलिस में सो बार ज़िक्र आए तो हर बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ना चाहिये। अगर नामे अक़्दस लिया या सुना तो **दुरूद शरीफ़** उस वक़्त न पढ़ा तो किसी दूसरे वक़्त में उस के बदले का पढ़ ले। नामे अक़्दस लिखे तो **दुरूद शरीफ़** ज़रूर लिखे कि बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक उस वक़्त **दुरूद** लिखना वाजिब है। **अक्सर लोग आज कल दुरूद शरीफ़ के बदले** صلعم, عم, ﺻ , ﻋ **लिखते हैं येह ना जाइज़ व सख़्त ह़राम है।** यूंही رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की جگہ رض, رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की जगह رح लिखते हैं येह भी न

मदीना

[1] : الزواجر ج ۱ ص ۲۸

चाहिये । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 533, 534) صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم लिखने पढ़ने से भी वाजिब अदा हो जाएगा । इस में दुरूद शरीफ़ के साथ साथ सलाम भेजना भी है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इस्मे मुबारक लिख कर उस पर "ج" न लिखा करें, عَزَّوَجَلَّ या جَلَّ جَلَالُهٗ पूरा लिखिये ।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 305)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुरूद शरीफ़ न पढ़ा हो तो बा'द में ज़रूर पढ़ लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी आप ने जो हिकायत सुनी उस में नामे अक़्दस पर **दुरूद शरीफ़** न पढ़ने वाले शख़्स के ख़ातिमे के मु-तअ़ल्लिक़ देखे जाने वाले तश्वीश नाक ख़्वाब का बयान है । हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी और उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** से डर जाना चाहिये और **दुरूद शरीफ़** पढ़ने में ग़फ़्लत नहीं करनी चाहिये । आज से पहले हो सकता है बारहा ऐसा हुवा हो कि हम ने नामे अक़्दस सुन कर या बोल कर **दुरूद शरीफ़** न पढ़ा हो । लिहाज़ा इस ग़-लती से तौबा कर के अब पढ़ लीजिये और आयिन्दा कोशिश कर के उसी वक़्त पढ़ लिया कीजिये ।

वोह सलामत रहा क़ियामत में
पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

बुरे ख़ातिमे के चार अस्बाब

"**शर्हुस्सुदूर**" में है, बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : बुरे ख़ातिमे के चार अस्बाब हैं (1) नमाज़ में सुस्ती (2) शराब नोशी (3) वालिदैन की ना फ़रमानी (4) मुसल्मानों को तक्लीफ़ देना।

(شرحُ الصُّدور ص ٢٧)

तौबा के तीन अरकान

जो इस्लामी भाई مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **नमाज़** नहीं पढ़ते या क़ज़ा कर के पढ़ते हैं, अपनी कोताही के बाइ़स नमाज़े फ़ज्र के लिये नहीं उठते या बिला शर-ई मजबूरी के मस्जिद में बा जमाअ़त पढ़ने के बजाए घर ही पर नमाज़ पढ़ लेते हैं उन के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिया है ! कहीं नमाज़ में सुस्ती **बुरे ख़ातिमे का सबब** न बन जाए। इसी त़रह़ शराब ख़ोर, मां बाप का ना फ़रमान और मुसल्मानों को अपनी ज़बान या हाथ वग़ैरा से ईज़ा देने वाला सच्ची तौबा कर ले। सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : तौबा की अस्ल रुजूअ़ इलल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करना) है इस के तीन रुक्न हैं : एक ए'तिराफ़े जुर्म, दूसरे नदामत, तीसरे अ़ज़्मे तर्क (या'नी उस गुनाह को छोड़ने का पक्का इरादा)। अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो उस की तलाफ़ी (या'नी नुक़्सान का बदला) भी लाज़िम है म-सलन तारिके सलात (या'नी बे नमाज़ी) की तौबा के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ना भी ज़रूरी है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 16) और अगर हुक़ूक़ुल इ़बाद तलफ़ किये हैं तो तौबा के साथ साथ उन की तलाफ़ी ज़रूरी है, म-सलन मां बाप, बहन भाई, बीवी या दोस्त

वग़ैरा की दिल आज़ारी की है तो उस से इस त़रह़ मुआ़फ़ी मांगे कि वोह मुआ़फ़ कर दे। सिर्फ़ मुस्कुरा कर Sorry कह देना हर मुआ़-मले में काफ़ी नहीं होता !

नफ़्स येह क्या ज़ुल्म है जब देखो ताज़ा जुर्म है
ना-तुवां के सर पे इतना बोझ भारी वाह वाह

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन उ़यूब की नुहूसत की ह़िकायत

"मिन्हाजुल आ़बिदीन" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुज़ैल बिन इ़याज़** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने एक शागिर्द की नज़्अ़ के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस के पास बैठ कर **सूरए यासीन** शरीफ़ पढ़ने लगे तो उस शागिर्द ने कहा : **"सूरए यासीन पढ़ना बन्द कर दो।"** फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे कलिमा शरीफ़ की तल्क़ीन[1] फ़रमाई। **वोह बोला : "मैं हरगिज़ येह कलिमा नहीं पढ़ूंगा मैं इस से बेज़ार हूं।" बस इन्हीं अल्फ़ाज़ पर उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई।** ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अपने शागिर्द के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुवा, चालीस रोज़ तक अपने घर में बैठे रोते रहे। चालीस दिन के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ख़्वाब** में देखा कि फ़िरिश्ते उस शागिर्द को जहन्नम में घसीट रहे हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से पूछा : किस सबब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरी मा'रिफ़त सल्ब फ़रमा ली ? मेरे शागिर्दों में तेरा मक़ाम तो बहुत ऊंचा था ! उस ने जवाब दिया : **तीन उ़यूब** के सबब से :

1 : मरने वाले को येह न कहा जाए कि "कलिमा पढ़ !" बल्कि तल्क़ीन का सह़ीह़ त़रीक़ा येह है कि सकरात वाले के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ का विर्द किया जाए ताकि उसे भी याद आ जाए।

(1) **चुग़ली** (2) **ह़सद** (3) **शराब नोशी** कि एक बीमारी से शिफ़ा पाने की ग़रज़ से त़बीब के मश्वरे पर हर साल शराब का एक गिलास पीता था। (مِنھاجُ العابِدین ص۱۵۱ بتغیر قلیل)

नज़्अ़ के वक़्त कुफ़्र बकने का मस्अला

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठिये ! और घबरा कर अपने मा'बूदे बरह़क़ को राज़ी करने के लिये उस की बारगाहे बेकस पनाह में झुक जाइये। आह ! **चुग़ली, ह़सद** और **शराब नोशी** के सबब वलिय्ये कामिल का शागिर्द कुफ़्रिय्या कलिमात बक कर मरा। यहां एक ज़रूरी मस्अला अ़र्ज़ करता चलूं, चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : मरते वक़्त مَعَاذَ الله उस की ज़बान से कलिमए कुफ़्र निकला तो कुफ़्र का हुक्म न देंगे कि मुम्किन है मौत की सख़्ती में अ़क़्ल जाती रही हो और बेहोशी में येह (कुफ़्रिय्या) कलिमा निकल गया। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 809 ब ह़वाला درمختار ج۳ ص۹۶)

कुत्तों की शक्ल में ह़श्र

अफ़्सोस ! आज कल **चुग़ली** बहुत आ़म है, अक्सर लोगों को तो शायद पता तक नहीं चलता होगा कि मैं चुग़ल ख़ोरी कर रहा हूं ! याद रखिये ! चुग़ल ख़ोरी आख़िरत के लिये सख़्त तबाह कुन है। **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : (1) **ग़ीबत** करने वालों, **चुग़ल ख़ोरों** और पाकबाज़ लोगों के **ऐ़ब** तलाश करने वालों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) **कुत्तों** की शक्ल में उठाएगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

(التّوبيخ والتّنبيه ص٩٧رقم٢٢٠، اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٣ص٣٢٥حديث١٠) **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि तमाम इन्सान क़ब्रों से ब शक्ले इन्सानी उठेंगे फिर महशर में पहुंच कर बा'ज़ की सूरतें मस्ख़ हो जाएंगी। (या'नी बिगड़ जाएंगी म-सलन मुख़्तलिफ़ जानवरों जैसी हो जाएंगी) (मिरआत, जि. 6, स. 660) (2) "चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।"

(بخاری ج٤ ص ١١٥ حديث ٦٠٥٦)

चुग़ली की ता'रीफ़

अ़ल्लामा ऐनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से नक़्ल फ़रमाया : "किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना **चुग़ली** है।" (عمدة القاری ج٢ ص٥٩٤تحت الحديث٢١٦)

क्या हम चुग़ली से बचते हैं ?

अफ़्सोस ! अक्सर लोगों की गुफ़्त-गू में आज कल **ग़ीबत व चुग़ली** का सिल्सिला बहुत ज़ियादा पाया जाता है। दोस्तों की बैठक हो या मज़्हबी इज्तिमाअ़ के बा'द की जमघट, शादी की तक़रीब हो या ता'ज़ियत की निशस्त, किसी से मुलाक़ात हो या फ़ोन पर बात, चन्द मिनट भी अगर किसी से गुफ़्त-गू की सूरत बने और दीनी मा'लूमात रखने वाला कोई हस्सास फ़र्द अगर उस गुफ़्त-गू की "तश्ख़ीस" करे तो शायद अक्सर मजालिस में दीगर गुनाहों भरे अल्फ़ाज़ के साथ साथ वोह कुछ न कुछ "चुग़्लियां" भी साबित कर दे। हाए! हाए! हमारा क्या बनेगा !!! एक बार फिर इस ह़दीसे पाक पर ग़ौर कर लीजिये : "चुग़ल

ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।" काश ! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में **ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना**[1] नसीब हो जाए, काश ! ज़रूरत के सिवा कोई लफ़्ज़ ज़बान से न निकले, ज़ियादा बोलने वाले और दुन्यवी दोस्तों के झुरमट में रहने वाले का **ग़ीबत व चुग़ली** से बचना दुश्वार है। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस शख़्स की गुफ़्त-गू ज़ियादा हो उस की ग़-लतियां भी ज़ियादा होती हैं और जिस की ग़-लतियां ज़ियादा हों उस के गुनाह ज़ियादा होते हैं और जिस के गुनाह ज़ियादा हों वोह जहन्नम के ज़ियादा लाइक़ है।" (حلیۃ الاولیاء ج۳ ص۸۸ رقم ۳۲۷۸)

उस के लिये ख़ुश ख़बरी है

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जो माल में से ज़ाइद को ख़र्च करे और ज़ाइद गुफ़्त-गू को रोक ले।" (معجم کبیر ج۵ ص۷۲ حدیث۴۶۱۶)

पसन्दीदा जवाब देने से बचना

एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : कोई शख़्स बा'ज़ अवक़ात मुझ से कोई ऐसी बात कर देता है कि उस का जवाब देना मुझे इस क़दर पसन्द होता है जिस क़दर प्यासे आदमी को ठन्डा पानी भी पसन्द नहीं होता होगा ! लेकिन मैं इस बात से डरते हुए जवाब देने से बाज़ रहता हूं कि कहीं येह फ़ुज़ूल कलाम ही न हो। (اِحیاءُ العلوم ج۳ ص۱۴۱)

बा'ज़ अवक़ात जवाब देना फ़र्ज़ भी होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वोह सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه तो

1 : गुनाहों भरी बातों के साथ साथ फ़ुज़ूल गोई से बचने को दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाना कहते हैं।

फ़ुज़ूल गोई के ख़ौफ़ से जाइज़ पसन्दीदा जवाब देने से भी इज्तिनाब या'नी परहेज़ करें और हम किसी की बात की जब वज़ाहती कारवाई करने लगें तो न **ग़ीबत** छोड़ें न **चुग़ली**, न **ऐ़ब-दरी** से बाज़ आएं न इल्ज़ाम तराशी से। हाए! हाए! हमारा क्या बनेगा! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें अ़क़्ले सलीम दे दे और हम गुनाहों भरी गुफ़्त-गू से बाज़ न आने वालों को ह़क़ीक़ी मा'नों में ज़बान का **क़ुफ़्ले मदीना** नसीब फ़रमा। आमीन। यहां येह याद रहे! वोह सह़ाबिये रसूल थे उन्हें कहां जवाब देने की ज़रूरत है और कहां नहीं इस बात का इ़ल्म था, हमारे लिये येह है कि जहां जवाब देना ज़रूरी हो वहां जवाब देना ही होगा, यहां तक कि कभी तो जवाब देना फ़र्ज़ व वाजिब भी हो जाता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत में ह़सद की नुहूसत का भी तज़्किरा है। अफ़्सोस! **ह़सद** का मरज़ भी बहुत ज़ियादा फैल चुका है। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खा जाती है।"

(ابنِ ماجه ج ٤ ص ٤٧٣ حديث ٤٢١٠)

ह़सद की ता'रीफ़

ह़सद करने वाले को **ह़ासिद** और जिस से ह़सद किया जाए उस को **मह़सूद** कहते हैं। "**फ़तावा र-ज़विय्या**" जिल्द 24 सफ़ह़ा 428 पर ह़सद की ता'रीफ़ यूं बयान की गई है : "किसी की ने'मत के छिन जाने की आरज़ू करना।" (رَدُّالْمُحتار ج ١ ص ٦٦)

ह़सद की ता'रीफ़ का आसान लफ़्ज़ों में ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ता'रीफ़ से मा'लूम

हुवा कि किसी के पास कोई ने'मत देख कर तमन्ना करना कि काश ! इस से येह ने'मत छिन जाए। म-सलन किसी की शोहरत या इ़ज़्ज़त से नफ़रत का जज़्बा रखते हुए ख़्वाहिश करना कि येह किसी त़रह़ ज़लील हो जाए और इस की शोहरत या इ़ज़्ज़त जाती रहे, नीज़ किसी मालदार से जल कर येह तमन्ना करना कि इस का माली नुक़्सान हो जाए और येह ग़रीब हो जाए। इस त़रह़ की तमन्ना करना **ह़सद** है। और مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह वबा काफ़ी फैल चुकी है, आज कल दूसरे का कारोबार ठप करने के लिये बड़ी जिद्दो जह्द (या'नी दौड़ धूप) की जाती है, उस के माल की ख़्वाह म ख़्वाह ख़राबियां बयान कर के उस दुकानदार पर त़रह़ त़रह़ के इल्ज़ामात डाले जाते हैं और यूं **ह़सद** के सबब **झूट, ग़ीबत, तोहमत, चुग़ली, आबरू रेज़ी** और न जाने क्या क्या मज़ीद गुनाह किये जाते हैं। आह ! अब अक्सर मुसल्मानों में भाईचारा ख़त्म होता जा रहा है। पहले के मुसल्मान कितने भले इन्सान होते थे इस को इस **ह़िकायत** से समझिये :

सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना की ह़िकायत

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, शैख़ुल फ़ज़ीलत, सय्यिदुना व मौलाना मुर्शिदुना ज़ियाउद्दीन अह़मद क़ादिरी र-ज़वी म-दनी अल मा'रूफ़ **क़ुत़्बे मदीना** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तुर्कों के "दौरे ख़िदमत" से ही मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में मुक़ीम हो गए थे, तक़रीबन सतत्तर बरस वहां क़ियाम रहा और अब जन्नतुल बक़ीअ़ में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! पहले के (ग़ालिबन तुर्कों के दौर के) **अहले मदीना** को आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कैसा पाया ? फ़रमाया : एक मालदार ह़ाजी साह़िब

गु-रबा में कपड़ा तक़्सीम करने की ग़रज़ से ख़रीदारी के लिये एक **बज़्ज़ाज़** (या'नी कपड़ा बेचने वाले) की दुकान पर पहुंचे और मत़्लूबा कपड़ा काफ़ी मिक़्दार में त़लब किया। दुकानदार ने कहा : मैं ऑर्डर पूरा तो कर सकता हूं मगर मेरी दर-ख़्वास्त है कि आप सामने वाली दुकान से ख़रीद फ़रमा लीजिये क्यूं कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज मेरी अच्छी बिकरी हो गई है, उस बेचारे पड़ोसी दुकानदार का आज धन्दा कुछ मन्दा (या'नी कम हुवा) है। ह़ज़रते सय्यिदी **क़ुत़्बे मदीना** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "पहले के **अहले मदीना** ऐसे थे।" **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की किताब "**ह़सद**" (97 सफ़ह़ात) का मुत़ा-लआ़ कीजिये)

तुम ह़सद मेरे दिल से निकालो ! इस तबाही से मौला बचा लो
मुझ को दीवाना अपना बना लो, या नबी ताजदारे मदीना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद मुअज़्ज़िन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल था कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जो ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर एक ही दुआ़ की तक्रार कर रहा था : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दुन्या से मुसल्मान ही रुख़्सत करना।" मैं ने उस से पूछा : इस के इ़लावा कोई और दुआ़ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : मेरे **दो भाई** थे, बड़ा भाई **चालीस साल** तक मस्जिद में बिला मुआ़-वज़ा अज़ान देता रहा। जब उस की मौत का

वक़्त आया तो उस ने **क़ुरआने पाक** मांगा, हम ने उसे दिया ताकि इस से ब-र-कतें ह़ासिल करे, मगर **क़ुरआन शरीफ़** हाथ में ले कर वोह कहने लगा : "तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं क़ुरआन के तमाम ए'तिक़ादात व अह़कामात से बेज़ारी ज़ाहिर करता और **नसरानी** (या'नी क्रिस्चेन) मज़हब इख़्तियार करता हूं।" फिर वोह मर गया। इस के इलावा **दूसरे भाई** ने **तीस बरस** तक मस्जिद में **फ़ी सबीलिल्लाह** अज़ान दी। मगर उस ने भी आख़िरी वक़्त **नसरानी** होने का ए'तिराफ़ किया और मर गया। लिहाज़ा मैं अपने ख़ातिमे के बारे में बेह़द फ़िक्र मन्द हूं और हर वक़्त **ख़ातिमा बिलख़ैर** की दुआ मांगता रहता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद मुअज़्ज़िन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि : तुम्हारे **दोनों भाई** आख़िर ऐसा कौन सा गुनाह करते थे ? उस ने बताया : **"वोह ग़ैर औ़रतों में दिलचस्पी लेते और अम्रदों** (या'नी बे रीश लड़कों) **को** (शह्वत से) **देखते थे।"**

(الرّوض الفائق ص١٤)

रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़ब हो गया ! क्या अब भी ग़ैर औ़रतों से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी से बाज़ नहीं आएंगे ? क्या अब भी ग़ैर औ़रतों नीज़ अपनी भाभी, चची, ताई, मुमानी (कि येह भी शरअ़न ग़ैर औ़रतें ही हैं इन) से अपनी निगाहों को नहीं बचाएंगे ? इसी त़रह़ चचाज़ाद, तायाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफीज़ाद और ख़ालाज़ाद का नीज़ बीवी की बहन और बहनोई का आपस में पर्दा है। **ना मह़रम पीर और मुरीदनी** का भी पर्दा है। मुरीदनी अपने ना मह़रम पीर का हाथ नहीं चूम सकती।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

अम्रद को शह्वत से देखना ह़राम है

ख़बरदार ! अम्रद तो आग है आग ! अम्रद का क़ुर्ब, उस की दोस्ती, उस के साथ मज़ाक़ मस्ख़री, आपस में कुश्ती, खींचा तानी और लिपटा लिपटी जहन्नम में झोंक सकती है। अम्रद से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है अगर्चे उस बेचारे का कोई क़ुसूर नहीं, **अम्रद** होने के सबब उस की दिल आज़ारी भी मत कीजिये, मगर उस से अपने आप को बचाना बेह़द ज़रूरी है। हरगिज़ **अम्रद** को स्कूटर पर अपने पीछे मत बिठाइये, ख़ुद भी उस के पीछे मत बैठिये कि आग आगे हो या पीछे उस की **तपिश** हर सूरत में पहुंचेगी। शह्वत न हो जब भी **अम्रद** से गले मिलना मह़ल्ले फ़ितना (या'नी फ़ितने की जगह) है, और शह्वत होने की सूरत में गले मिलना बल्कि हाथ मिलाना बल्कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **अम्रद की त़रफ़ शह्वत के साथ देखना भी ह़राम है।** (فتاوٰی شامی ج۲ص۹۸) उस के बदन के हर ह़िस्से ह़त्ता कि लिबास से भी निगाहों को बचाइये। उस के तसव्वुर से अगर शह्वत आती हो तो इस से भी बचिये, उस की तह़रीर या किसी चीज़ से शह्वत भड़क्ती हो तो उस से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से नज़र की ह़िफ़ाज़त कीजिये, ह़त्ता कि उस के मकान को भी मत देखिये। अगर उस के वालिद या बड़े भाई वग़ैरा को देखने से उस का तसव्वुर क़ाइम होता है और शह्वत चढ़ती है तो उन को भी मत देखिये।

अम्रद के साथ 70 शैत़ान

अम्रद के ज़रीए किये जाने वाले शैत़ाने अ़य्यारो मक्कार के तबाहकार वार से ख़बरदार करते हुए मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है, **औ़रत के साथ दो शैत़ान होते हैं और अम्रद के साथ सत्तर**[70] । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 721) **बहर ह़ाल** अज्नबिय्या औ़रत (या'नी जिस से शादी हमेशा के लिये ह़राम न हो) उस से और **अम्रद** से अपनी आंखों और अपने वुजूद को दूर रखना सख़्त ज़रूरी है वरना अभी आप ने उन **दो भाइयों** की अम्वात के तश्वीश नाक मुआ़-मलात पढ़े जो ब ज़ाहिर नेक थे । मेह्रबानी फ़रमा कर **मक-त-बतुल मदीना** का मुख़्तसर रिसाला "क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां" (45 सफ़ह़ात) का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये ।

नफ़्से बे लगाम तो गुनाहों पे उक्साता है
तौबा तौबा करने की भी आ़दत होनी चाहिये

फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ह़ज अदा न करना बुरे ख़ातिमे का सबब है

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे **ह़ज** करने से न ज़ाहिरी ह़ाजत मानेअ़ (या'नी रुकावट) हुई न बादशाहे ज़ालिम न कोई ऐसा मरज़ जो रोक दे फिर बिग़ैर **ह़ज** के मर गया तो चाहे **यहूदी** हो कर मरे या **नसरानी** हो कर ।" (دارمی ج۲ص۴۵حدیث۱۷۸۵) मा'लूम हुवा कि **ह़ज** फ़र्ज़ होने के बा वुजूद जिस ने कोताही की और बिग़ैर **ह़ज** अदा किये मर गया तो उस का **बुरा ख़ातिमा** होने का शदीद ख़त़रा है ।

अज़ान के दौरान गुफ़्त-गू करने वाले के बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती

मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی **फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़** के ह़वाले से नक़्ल करते हैं : "जो **अज़ान** के वक़्त बातों में मश्ग़ूल रहे उस पर (عَزَّوَجَلَّ)مَعَاذَ الله **ख़ातिमा बुरा** होने का ख़ौफ़ है।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 473)

अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया (ह़िकायत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब अज़ान शुरूअ़ हो तो बातें और दीगर कामकाज मौक़ूफ़ कर के इस का जवाब देना चाहिये। हां अगर मस्जिद की त़रफ़ जा रहा है या वुज़ू कर रहा है तो चलते चलते और वुज़ू करते करते जवाब दे सकता है। जब पै दर पै अज़ानों की आवाज़ें आ रही हों तो **पहली अज़ान** का जवाब दे देना काफ़ी है, अगर सब अज़ानों का जवाब दे तो बेहतर है। **अज़ान का जवाब** देने वालों की भी क्या ख़ूब बहारें हैं चुनान्चे "तारीख़े दिमश्क़" जिल्द 40 सफ़ह़ा 412 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि एक साह़िब जिन का ब ज़ाहिर कोई बहुत बड़ा नेक अ़मल न था, वोह फ़ौत हो गए तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मौजू-दगी में फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि **अल्लाह तआ़ला** ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है। इस पर लोग मु-तअ़ज्जिब हुए क्यूं कि ब ज़ाहिर उन का कोई बड़ा अ़मल न था। चुनान्चे एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उन के घर गए और उन की बेवा से पूछा कि उन का कोई ख़ास अ़मल हमें बताइये, तो उन्हों ने जवाब दिया : और तो कोई ख़ास बड़ा अ़मल मुझे मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि

दिन हो या रात, जब भी वोह अज़ान सुनते तो जवाब ज़रूर देते थे। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٤٠ ص ٤١٢ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** **अज़ान** व जवाबे अज़ान के मज़ीद अह़कामात की मा'लूमात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** का रिसाला **फ़ैज़ाने अज़ान** (32 सफ़ह़ात) का ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

गु-नहे गदा[1] का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे लाखों से हैं सिवा
मगर ऐ अ़फ़ू तेरे अ़फ़्व का न ह़िसाब है न शुमार है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 355)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आग लपक्ती है (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار एक बीमार के सिरहाने तशरीफ़ लाए जो कि क़रीबुल मौत था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कई बार उसे कलिमा शरीफ़ तल्क़ीन फ़रमाया, लेकिन वोह **''दस ग्यारह, दस ग्यारह''** की आवाज़ें लगाता रहा! जब उस से इस की वज्ह पूछी गई तो कहा : मेरे सामने **आग का पहाड़ है जब मैं कलिमा शरीफ़ पढ़ने की कोशिश करता हूं तो येह आग मुझे जलाने के लिये लपक्ती है।** फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने लोगों से पूछा : दुन्या में येह क्या काम करता था? बताया गया कि येह **सूदख़ोर** था और **कम तोला** करता था। (تذکرۃ الاولیاء ص ٤٦)

1 : येह आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के कलाम का मक़्त़अ़ है, रज़ा की जगह अ-दबन अपनी निय्यत से ''गदा'' लिख दिया है।

नाप तोल में कमी का अ़ज़ाब

आह ! सूदख़ोरों और नाप तोल में कमी करने वालों की बरबादी ! चन्द सिक्कों की ख़ातिर अपने आप को जहन्नम के शो'लों की नज़्र करने की जिसारत करने वालो ! सुनो ! सुनो ! "**रूहुल बयान**" में नक़्ल किया गया है : जो शख़्स **नाप तोल** में ख़ियानत करता है क़ियामत के रोज़ उसे जहन्नम की गहराइयों में डाला जाएगा और **दो पहाड़ों** के दरमियान बिठा कर हुक्म दिया जाएगा : "इन पहाड़ों को नापो और तोलो।" जब तोलने लगेगा तो आग उस को जला देगी। (روحُ البیان ج ۱۰ ص ۳٦٤)

गर उन के फ़ज़्ल पे तुम ए'तिमाद कर लेते
ख़ुदा गवाह कि हासिल मुराद कर लेते

कहीं ईमान की दौलत न छिन जाए !!

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास ह़ाज़िर हुवा, आप सारी रात रोते रहे। मैं ने पूछा : आप गुनाहों के ख़ौफ़ से रो रहे हैं ? आप ने एक तिन्का उठा कर फ़रमाया : गुनाह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस तिन्के से भी कम हैसिय्यत रखते हैं, मुझे तो इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं ईमान की दौलत न छिन जाए !

(منهاجُ العابدین ص۱۵۵)

एक शैख़ का बुरा ख़ातिमा (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान रा-ई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दोनों एक जगह इकठ्ठे हुए। सय्यिदुना

सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सारी रात रोते रहे। सय्यिदुना **शैबान** रा-ई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : मुझे **बुरे ख़ातिमे** का ख़ौफ़ रुला रहा है, आह! मैं ने और चन्द लोगों ने एक शैख़ से चालीस साल इल्म हासिल किया, उस ने साठ[60] साल तक मस्जिदुल हराम में इबादत की मगर उस का ख़ातिमा कुफ़्र पर हुवा। सय्यिदुना शैबान रा-ई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कहा : **ऐ सुफ़्यान !** वोह उस के **गुनाहों की शामत** थी आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी हरगिज़ मत करना। (سبع سنابل ص٣٤ مُلَخَّصاً)

फ़िरिश्तों का साबिक़ा उस्ताज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है उस की ख़ुफ़्या तदबीर को कोई नहीं जानता, किसी को भी अपने इल्म या इबादत पर नाज़ नहीं करना चाहिये। शैत़ान ने **हज़ारों साल इबादत** की, अपनी रियाज़त और इल्मिय्यत के सबब मुअ़ल्लिमुल म-लकूत या'नी फ़िरिश्तों का उस्ताज़ बन गया था लेकिन इस बद बख़्त को तकब्बुर ले डूबा और वोह काफ़िर हो गया। अब बन्दों को बहकाने के लिये वोह पूरा ज़ोर लगाता है, ज़िन्दगी भर तो वस्वसे डालता ही रहता है मगर मरते वक़्त पूरी त़ाक़त सर्फ़ कर देता है कि किसी त़रह़ बन्दे का **बुरा ख़ातिमा** हो जाए। चुनान्चे :

शैत़ान वालिदैन के रूप में

मन्क़ूल है : जब इन्सान नज़्अ़ के आ़लम में होता है **दो शैत़ान** उस के दाएं बाएं आ कर बैठ जाते हैं, दाईं (या'नी सीधी) त़रफ़ वाला शैत़ान उस के **वालिद** का रूप धार कर कहता है : **बेटा !** देख मैं तेरा

मेह्रबान व शफ़ीक़ बाप हूं मैं तुझे नसीह़त करता हूं कि तू **नसारा** का **मज़्हब** इख़्तियार कर के मरना क्यूं कि वोही सब से बेहतरीन मज़्हब है। बाईं (या'नी उलटी) जानिब वाला शैत़ान मरने वाले की **मां** की सूरत बन कर कहता है : **मेरे लाल !** मैं ने तुझे अपने पेट में रखा, अपना दूध पिलाया और अपनी गोद में पाला है। प्यारे बेटे ! मैं नसीह़त करती हूं, **यहूदी मज़्हब** इख़्तियार कर के मरना कि येही सब से आ'ला मज़्हब है। (اَلتَّذْكِرة لِلْقُرطبی ص٣٨)

मौत की तकालीफ़ का एक क़त़रा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बेह़द तश्वीश नाक मुआ़-मला है। बन्दा जब बुख़ार या दर्दे सर वग़ैरा में मुब्तला होता है तो उस से किसी बात में फ़ैसला करना दुश्वार हो जाता है, फिर **नज़्अ़** की तकालीफ़ तो बहुत ही ज़ियादा होती हैं ! "**शर्हुस्सुदूर**" में है : "अगर मौत की तकालीफ़ का एक क़त़रा तमाम आस्मान व ज़मीन में रहने वालों पर टपका दिया जाए तो सब मर जाएं।" (شرحُ الصُّدور ص٣٢) अब ऐसी नाज़ुक ह़ालत में जब **मां बाप के रूप में शयात़ीन** बहकाते होंगे उस वक़्त इन्सान को इस्लाम पर साबित क़दम रहना किस क़दर दुश्वार हो जाता होगा।

या रसूलल्लाह ! कहा था मरते दम   क़ब्र में पहुंचा तो देखा आप हैं

शैत़ान दोस्तों की शक्ल में

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : **सकरात** के वक़्त

शैत़ान अपने चेलों को मरने वाले के दोस्तों और रिश्तेदारों की शक्लों में ले कर आ पहुंचता है ! येह सब कहते हैं : **भाई !** हम तुझ से पहले मौत का मज़ा चख चुके हैं, मरने के बा'द जो कुछ होता है उस से हम अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ हैं, अब तेरी बारी है, हम तुझे हमदर्दाना मश्वरा देते हैं कि तू **यहूदी मज़हब** इख़्तियार कर ले कि येही दीन **अल्लाह तआ़ला** की बारगाह में मक़्बूल है। अगर मरने वाला उन की बात नहीं मानता तो इसी त़रह़ दूसरे अह़बाब के रूप में **शयात़ीन** आ आ कर कहते हैं, तू **नसारा का मज़हब** इख़्तियार कर ले क्यूं कि इसी मज़हब ने (ह़ज़रते) **मूसा** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के दीन को मन्सूख़ किया था। यूं ही अइ़ज़्ज़ा व अक़्रिबा (प्यारों और रिश्तेदारों) की शक्लों में जमाअ़तें आ कर मुख़्तलिफ़ बात़िल फ़िर्क़ों को क़बूल कर लेने के मश्वरे देती हैं। तो जिस की क़िस्मत में ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ होना (या'नी फिर जाना) लिखा होता है वोह उस वक़्त डग-मगा जाता और बात़िल मज़हब इख़्तियार कर लेता है।

(الدرة الفاخرة فی کشف علوم الآخرة معه مجموعة رسائل الامام الغزالی ص ۵۱۱)

किसी और से हमें क्या ग़रज़, किसी और से हमें क्या त़लब
हमें अपने आक़ा से काम है, न इधर गए न उधर गए

हमारा क्या बनेगा ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर करम फ़रमाए, नज़्अ़ के वक़्त न जाने हमारा क्या बनेगा ! आह ! हम ने बहुत गुनाह कर रखे हैं, नेकियां नाम को नहीं हैं, हम दुआ़ करते हैं : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! नज़्अ़ के वक़्त हमारे पास शयात़ीन न आएं बल्कि रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करम फ़रमाएं।

नज़्अ़ के वक़्त मुझे जल्वए मह़बूब दिखा

तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब

ज़बान क़ाबू में रखिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी और उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** से हर मुसल्मान को लरज़ां व तरसां रहना चाहिये, न जाने कौन सी मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब को उभार दे और **ईमान** के लिये ख़त़रा पैदा हो जाए। बस हर वक़्त अपने रब عَزَّوَجَلَّ के आगे **आ़जिज़ी** का मुज़ा-हरा करते रहना चाहिये, **ज़बान क़ाबू में रखनी चाहिये** कि ज़ियादा बोलते रहने से भी बा'ज़ अवक़ात मुंह से **कलिमाते कुफ़्र** निकल जाते हैं और पता तक नहीं लगता, हर वक़्त **ईमान** की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहना ज़रूरी है।

बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ न होना तश्वीश नाक है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं **:** "जो शख़्स (जीते जी) ईमान के छिन जाने से बे ख़ौफ़ होगा उस का ईमान छिन जाने का शदीद ख़त़रा है।" (الزهد لابن المبارك ج١ص٥٤١ملخّصا) **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن का इर्शाद है, **उ़-लमाए किराम** फ़रमाते हैं **:** "जिस को (ज़िन्दगी में) सल्बे ईमान का ख़ौफ़ न हो मरते वक़्त उस का ईमान सल्ब हो (या'नी छिन) जाने का अन्देशा है।"

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 495)

आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है
काश के मेरी मां ने ही नहीं जना होता

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 158)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अच्छे ख़ातिमे के लिये म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तश्वीश..... तश्वीश..... निहायत ही सख़्त तश्वीश की बात है, हम नहीं जानते कि हमारे बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर क्या है,** न मा'लूम हमारा **ख़ातिमा** कैसा होगा ! हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى का फ़रमाने आ़ली है : **बुरे ख़ातिमे** से **अम्न** चाहते हो तो अपनी सारी ज़िन्दगी **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में बसर करो और हर हर गुनाह से बचो, ज़रूरी है कि तुम पर आ़रिफ़ीन (या'नी बुज़ुर्गाने दीन) जैसा ख़ौफ़ ग़ालिब रहे ह़त्ता कि इस के सबब तुम्हारा **रोना धोना** त़वील हो जाए और तुम हमेशा **ग़मगीन** रहो। आगे चल कर **मज़ीद फ़रमाते हैं :** तुम्हें **अच्छे ख़ातिमे** की तय्यारी में मश्ग़ूल रहना चाहिये। हमेशा **ज़िक्रुल्लाह** में लगे रहो, दिल से दुन्या की मह़ब्बत निकाल दो, गुनाहों से अपने आ'ज़ा बल्कि दिल की भी ह़िफ़ाज़त करो, जिस क़दर मुम्किन हो बुरे लोगों को देखने से भी बचो कि इस से भी दिल पर असर पड़ता है और तुम्हारा ज़ेह्न उस त़रफ़ माइल हो सकता है। (اِحیاء العلوم ج ٤ ص ٢١٩، ٢٢٠ ملخّصاً)

मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़त़ा से हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 105)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

ईमान पर ख़ातिमे के चार अवराद

एक शख़्स बारगाहे **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه में ह़ाज़िर हो कर ईमान पर ख़ातिमा बिलख़ैर के लिये दुआ का त़ालिब हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस के लिये दुआ फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : ﴿1﴾ (रोज़ाना) 41 बार सुब्ह़ को [1] يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ नीज़ ﴿2﴾ सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द **सू-रतुल काफ़िरून** रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम वग़ैरा न कीजिये हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बा'द फिर **सू-रतुल काफ़िरून** तिलावत कर लें कि ख़ातिमा इसी पर हो, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा ईमान पर होगा। और ﴿3﴾ तीन बार सुब्ह़ और तीन बार शाम इस दुआ का विर्द रखें : اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَّعْلَمُهٗ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى دِيْنِيْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِيْ وَوُلْدِيْ ﴿4﴾ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُهٗ [2ط] وَاَهْلِيْ وَمَالِيْ [3ط] सुब्ह़ व शाम तीन तीन बार पढ़िये, दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब महफ़ूज़ रहें।[4] (आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक **सुब्ह़** और दो पहर ढले (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोह़र) से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक **शाम** है)

---

1 : ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ! ऐ हमेशा क़ाइम रहने वाले ! कोई मा'बूद नहीं मगर तू। **2 :** "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी पनाह मांगते हैं इस से कि जान कर हम तेरे साथ किसी चीज़ को शरीक करें और हम उस से इस्तिग़फ़ार करते हैं जिस को नहीं जानते।" (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 311) **3 : अल्लाह** तआ़ला के नाम की ब-र-कत से मेरे दीन, जान, औलाद और अहलो माल की हिफ़ाज़त हो। **4 :** श-ज-रए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या, स. 15

आग के सन्दूक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस किसी बद नसीब का कुफ़्र पर ख़ातिमा होगा उस को क़ब्र इस ज़ोर से दबाएगी कि इधर की पस्लियां उधर और उधर की इधर हो जाएंगी। **काफ़िर** के लिये इसी त़रह़ और भी दर्दनाक अ़ज़ाब होंगे। क़ियामत का **पचास हज़ार सालह** दिन सख़्त तरीन होल-नाकियों में बसर होगा, फिर उसे औंधे मुंह घसीट कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा। जो गुनाहगार मुसल्मान दाख़िले जहन्नम हुए होंगे जब उन को निकाल लिया जाएगा और दोज़ख़ में सिर्फ़ वोही लोग रह जाएंगे जिन का **कुफ़्र पर ख़ातिमा** हुवा था। **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 170 ता 171 पर है : फिर आख़िर में कुफ़्फ़ार के लिये येह होगा कि उस के क़द बराबर आग के सन्दूक़ में उसे बन्द करेंगे, फिर उस में आग भड़काएंगे और आग का क़ुफ़्ल (या'नी ताला) लगाया जाएगा, फिर येह सन्दूक़ आग के दूसरे सन्दूक़ में रखा जाएगा और उन दोनों के दरमियान आग जलाई जाएगी और उस में भी आग का क़ुफ़्ल लगाया जाएगा, फिर इसी त़रह़ उस को एक और सन्दूक़ में रख कर और आग का क़ुफ़्ल लगा कर आग में डाल दिया जाएगा। तो अब हर काफ़िर येह समझेगा कि इस के सिवा अब कोई आग में न रहा, और येह अ़ज़ाब बालाए अ़ज़ाब है और अब हमेशा उस के लिये अ़ज़ाब है।

मौत को ज़ब्ह़ कर दिया जाएगा !

जब सब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो लेंगे और जहन्नम में सिर्फ़ वोही रह जाएंगे जिन को हमेशा के लिये उस में रहना है, उस वक़्त जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान मौत को मेंढे की त़रह़ ला कर खड़ा करेंगे, फिर

मुनादी (पुकारने वाला) जन्नत वालों को पुकारेगा, वोह डरते हुए झांकेंगे कि कहीं ऐसा न हो कि यहां से निकलने का हुक्म हो, फिर जहन्नमियों को पुकारेगा, वोह ख़ुश होते हुए झांकेंगे कि शायद इस मुसीबत से रिहाई हो जाए, फिर उन सब से पूछेगा कि इसे पहचानते हो ? सब कहेंगे : हां ! येह मौत है, वोह ज़ब्ह कर दी जाएगी और कहेगा : ऐ अहले जन्नत ! हमेशगी है, अब मरना नहीं और ऐ अहले नार ! हमेशगी है, अब मौत नहीं, उस वक़्त उन के लिये ख़ुशी पर ख़ुशी है और इन के लिये ग़म बालाए ग़म। نَسْـأَلُ اللّٰـهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَالْاٰخِرَة۔

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 170 ता 171)

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से ईमानो आ़फ़िय्यत के साथ मदीने में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में म-दनी महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस का सुवाल करते हैं।

पाया है वोह अल्ताफ़ो करम आप के दर पर मरने की दुआ़ करते हैं हम आप के दर पर
सब अ़र्ज़ें बयां ख़त्म है ख़ामोश खड़ा है आशुफ़्ता है बद्र आंख है नम आप के दर पर

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हरगिज़ मायूस न हों। आप **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करते रहेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनता रहेगा। जब ज़ेहन बनेगा तो एह़सास पैदा होगा, रिक़्क़त मिलेगी, दुआ़ के लिये हाथ उठेंगे फिर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में येह अ़र्ज़ करेंगे :

तूने इस्लाम दिया तूने जमाअ़त में लिया
तू करीम अब कोई फिरता है अ़ति़य्या तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 18)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अम्मीजान की बीनाई लौट आई

बाबुल मदीना कराची की एक इस्लामी बहन की अम्मीजान (उ़म्र तक़रीबन 60 बरस) सुब्ह़ जब नींद से बेदार हुईं तो खुली आंखों के बा वुजूद उन्हें कुछ सुझाई न देता था, डॉक्टर से रुजूअ़ किया गया तो पता चला कि "हाई ब्लड प्रेशर" के नतीजे में इन की आंखों के दिये बुझ गए हैं! इन की बीनाई सल्ब हो गई है। मुख़्तलिफ़ डॉक्टरों के पास पहुंचे मगर सभी ने मायूस किया।

त़बीबों ने मरीज़े ला-दवा कह कह के टाला है
बना, नाकाम इन का इन्दिया दो या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 342)

अम्मीजान की ख़्वाहिश पर फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना) के वसीओ़ अ़रीज़ तहख़ाने में इतवार को दोपहर के वक़्त होने वाले हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में दो बहनें उन को सहारा दे कर ले आईं। वहां होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ ने दोनों बहनों और अम्मीजान को ख़ूब रुलाया। **यकायक अम्मीजान की आंखों में बिजली सी कौंद गई और** اَلْحَمْدُ لِلّٰه **फ़ैज़ाने मदीना का फ़र्श साफ़ नज़र आने लगा फिर देखते ही देखते आंखें मुकम्मल रोशन हो गईं।**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

सुन्नत की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में रह़मत की घटा छाई फ़ैज़ाने मदीना में
नाक़िस है जो सुनवाई, कमज़ोर है बीनाई मांग आ के दुआ भाई फ़ैज़ाने मदीना में
आफ़त में घिरा है गर, बीमार पड़ा है गर आ कर ले दुआ भाई फ़ैज़ाने मदीना में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान के आख़िर में **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मेरी **सुन्नत** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساکِر ج۹ص۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"मिस्वाक करना सुन्नते मुबा-रका है" के बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के 20 म-दनी फूल

पहले **दो फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ۞ दो रक्अ़त **मिस्वाक** कर के पढ़ना बिग़ैर **मिस्वाक** की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج۱ ص۱۰۲ حدیث۱۸) ۞ **मिस्वाक** का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूं कि इस में मुंह की सफ़ाई और येह रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है (مُسنَدِ اِمام احمد بن حنبل ج۲ ص۴۳۸ حدیث ۵۸۶۹) ۞ **दा'वते इस्लामी** के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 288 पर है : मशाइख़े किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) फ़रमाते हैं : "**जो शख़्स मिस्वाक का आ़दी हो मरते वक़्त उसे कलिमा पढ़ना नसीब होगा** और जो **अफ़्यून** खाता हो, मरते वक़्त उसे कलिमा नसीब न होगा" ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **मिस्वाक** में दस ख़ूबियां हैं : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत़ बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बल्ग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मे'दा दुरुस्त करती है (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج۵ص ۲۴۹ حدیث ۱۴۸۶۷) ۞ **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی नक़्ल करते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिबली** बग़दादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی को वुज़ू के वक़्त **मिस्वाक** की ज़रूरत हुई, तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक सोने की अशरफ़ी) में **मिस्वाक** ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई। बा'ज़ लोगों ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा ख़र्च कर डाला! कहीं इतनी महंगी भी **मिस्वाक** ली जाती है! फ़रमाया : बेशक येह दुन्या और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मच्छर के पर बराबर भी ह़ैसिय्यत नहीं रखतीं, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से येह पूछ लिया कि "तूने मेरे प्यारे ह़बीब (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? जो मालो दौलत मैं ने तुझे दिया था उस की ह़क़ीक़त तो (मेरे नज़्दीक) मच्छर के पर बराबर भी नहीं थी, तो आख़िर ऐसी ह़क़ीर दौलत इस अ़ज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) को ह़ासिल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

करने पर क्यूं ख़र्च नहीं की ?" तो क्या जवाब दूंगा ! (مُلَخَّص اَز لَوَاقِحُ الْاَنْوَار ص ٣٨)

❁ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : चार चीज़ें अ़क़्ल बढ़ाती हैं : ﴾1﴿ फ़ुज़ूल बातों से परहेज़ ﴾2﴿ **मिस्वाक** का इस्ति'माल ﴾3﴿ सु-लह़ा या'नी नेक लोगों की सोह़बत और ﴾4﴿ अपने इ़ल्म पर अ़मल करना। (حياةُ الحيوان ج ٢ ص ١٦٦) ❁ **मिस्वाक** पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो ❁ **मिस्वाक** की मोटाई छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ❁ **मिस्वाक** एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैत़ान बैठता है ❁ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (Gap) का बाइ़स बनते हैं ❁ **मिस्वाक** ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ❁ त़बीबों का मश्वरा है कि **मिस्वाक** के रेशे रोज़ाना काटते रहिये।

मिस्वाक करने का त़रीक़ा

❁ दांतों की चौड़ाई में **मिस्वाक** कीजिये ❁ जब भी **मिस्वाक** करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये, हर बार धो लीजिये ❁ **मिस्वाक** सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली इस के नीचे और बीच की तीन उंग्लियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो, पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे **मिस्वाक** कीजिये ❁ मुट्ठी बांध कर **मिस्वाक** करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ❁ **मिस्वाक** वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है (या'नी मिस्वाक वुज़ू से पहले की सुन्नत है वुज़ू के अन्दर की सुन्नत नहीं लिहाज़ा वुज़ू शुरूअ़ करने से क़ब्ल मिस्वाक कीजिये

फिर तीन तीन बार दोनों हाथ धोएं और त़रीक़े के मुत़ाबिक़ वुज़ू मुकम्मल कीजिये) अलबत्ता सुन्नते मुअक्कदा उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 837)

औ़रतों के लिये मिस्वाक करना बीबी आ़इशा की सुन्नत है

❁ "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" में है : "औ़रतों के लिये **मिस्वाक** करना उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की **सुन्नत** है लेकिन अगर वोह न करें तो ह़रज नहीं। उन के दांत और मसूढ़े ब निस्बत मर्दों के कमज़ोर होते हैं, (उन के लिये) मिस्सी या'नी दन्दासा काफ़ी है।" (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 357)

जब मिस्वाक ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए

❁ **मिस्वाक** जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिये। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की किताब बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 294 ता 295 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये)

क्या आप को मिस्वाक करना आता है ?

❁ **हो सकता है** आप के दिल में येह ख़याल आए कि मैं तो बरसों से **मिस्वाक** इस्ति'माल करता हूं मगर मेरे तो दांत और पेट दोनों ही ख़राब हैं ! मेरे भोले भाले इस्लामी भाई ! इस में **मिस्वाक** का नहीं आप का अपना क़ुसूर है। मैं (सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ) इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि आज

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

शायद हज़ारों में से कोई एकआध ही ऐसा हो जो सह़ीह़ उसूलों के मुत़ाबिक़ **मिस्वाक** इस्ति'माल करता हो, हम लोग अक्सर जल्दी जल्दी दांतों पर **मिस्वाक** मल कर वुज़ू कर के चल पड़ते हैं या'नी यूं कहिये कि हम **मिस्वाक** नहीं बल्कि "रस्मे **मिस्वाक**" अदा करते हैं !

सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की दो किताबें (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

2 मुह़र्रमुल ह़राम 1439 सि.हि.
23-9-2017

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूदे पाक न पढ़ने का वबाल (ह़िकायत)	1	अज़ान के दौरान गुफ़्त-गू करने वाले के बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़	14
ख़्वाब की बुन्याद पर किसी को काफ़िर नहीं कह सकते	1	अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया (ह़िकायत)	15
दुरूद के बदले ﷺ लिखना ना जाइज़ व सख़्त ह़राम है	2	आग लपक्ती है (ह़िकायत)	16
दुरूद शरीफ़ न पढ़ा हो तो बा'द में ज़रूर पढ़ लीजिये	3	नाप तोल में कमी का अ़ज़ाब	17
बुरे ख़ातिमे के चार अस्बाब	4	कहीं ईमान की दौलत न छिन जाए !!	17
तौबा के तीन अरकान	4	एक शैख़ का बुरा ख़ातिमा (ह़िकायत)	17
तीन उ़यूब की नुहूसत की ह़िकायत	5	फ़िरिश्तों का साबिक़ा उस्ताज़	18
नज़्अ़ के वक़्त कुफ़्र बकने का मस्अला	6	शैत़ान वालिदैन के रूप में	18
कुत्तों की शक्ल में ह़श्र	6	मौत की तकालीफ़ का एक क़त़रा	19
चुग़ली की ता'रीफ़	7	शैत़ान दोस्तों की शक्ल में	19
क्या हम चुग़ली से बचते हैं ?	7	हमारा क्या बनेगा ?	20
उस के लिये ख़ुश ख़बरी है	8	ज़बान क़ाबू में रखिये !	21
पसन्दीदा जवाब देने से बचना	8	बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ न होना तश्वीश नाक है	21
बा'ज़ अवक़ात जवाब देना फ़र्ज़ भी होता है	8	अच्छे ख़ातिमे के लिये म-दनी फूल	22
ह़सद की ता'रीफ़	9	ईमान पर ख़ातिमे के चार अवराद	23
ह़सद की ता'रीफ़ का आसान लफ़्ज़ों में ख़ुलासा	9	आग के सन्दूक़	24
सय्यिदी क़ुत्बे मदीना की ह़िकायत	10	मौत को ज़ब्ह़ कर दिया जाएगा !	24
दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी (ह़िकायत)	11	अम्मीजान की बीनाई लौट आई	26
		मिस्वाक के 20 म-दनी फूल	27
		मिस्वाक करने का त़रीक़ा	29
रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा	12	औ़रतों के लिये मिस्वाक करना बीबी आ़इशा की सुन्नत है	30
अम्रद को शह़वत से देखना ह़राम है	13	जब मिस्वाक ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए	30
अम्रद के साथ 70 शैत़ान	13	क्या आप को मिस्वाक करना आता है ?	30
फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ह़ज अदा न करना बुरे ख़ातिमे का सबब है	14	मआख़िज़ो मराजेअ़	34

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن کریم		الزہد	دار الکتب العلمیۃ بیروت
روح البیان	دار احیاء التراث العربی بیروت	التذکرۃ	دار السلام مصر
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا الہند
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الزواجر	دار المعرفۃ بیروت
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	لواقح الانوار	دار احیاء التراث العربی بیروت
دارمی	دار الکتاب العربی بیروت	الروض الفائق	دار احیاء التراث العربی بیروت
مسند امام احمد بن حنبل	دار الفکر بیروت	التوبیخ والتنبیہ	مکتبۃ الفرقان قاہرہ مصر
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	حیاۃ الحیوان	دار الکتب العلمیۃ بیروت
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	سبع سنابل	مکتبہ قادریہ مرکز الاولیاء لاہور
الترغیب والترہیب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	تذکرۃ الاولیاء	انتشارات زوار تہران
تاریخ دمشق	دار الفکر بیروت	درمختار وردالمحتار	دار المعرفۃ بیروت
جمع الجوامع	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
عمدۃ القاری	دار الفکر بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مرآۃ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
احیاء العلوم	دار صادر بیروت	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
منہاج العابدین	دار الکتب العلمیۃ بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الدرۃ الفاخرۃ	دار الفکر بیروت	شجرہ قادریہ رضویہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या म-दनी फूलों के पेम्फ़लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

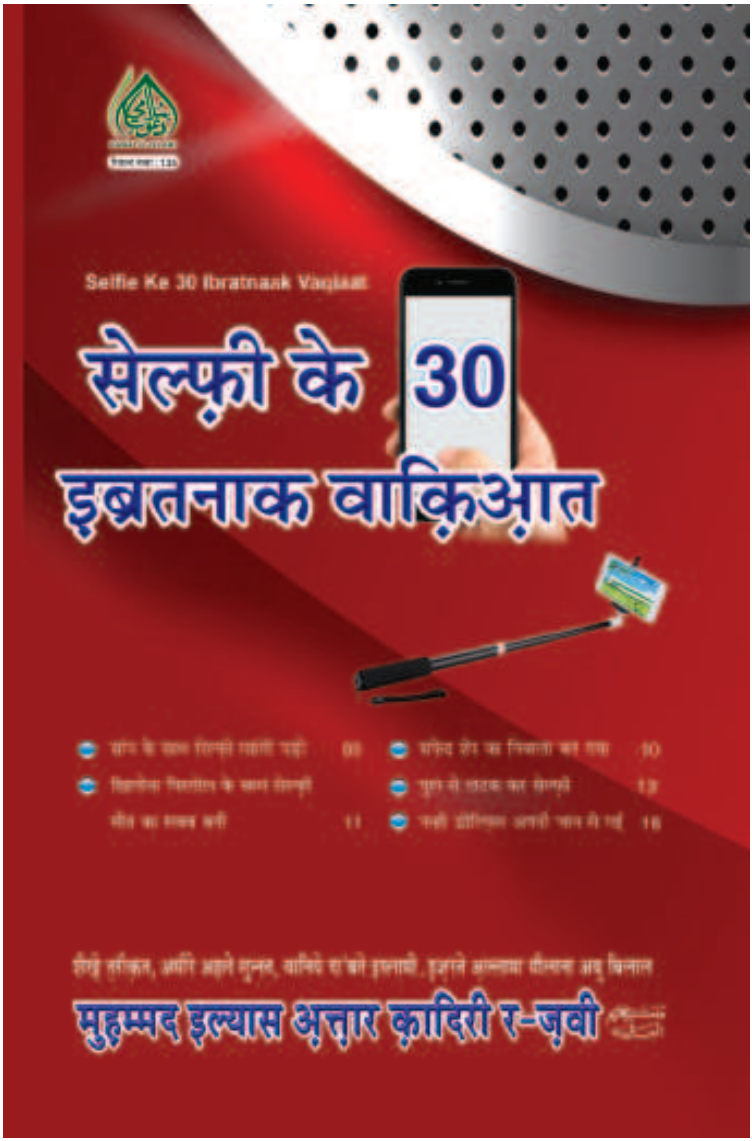
Selfie Ke 30 Ibratnaak Vaqiaat
सेल्फ़ी के 30
इब्रतनाक वाक़िआ़त
मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

नेकी की दा'वत (मुख़्तसर)

हम अल्लाह पाक के गुनाहगार बन्दे और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गुलाम हैं। यक़ीनन ज़िन्दगी मुख़्तसर है, हम हर वक़्त मौत के क़रीब होते जा रहे हैं। हमें जल्द ही अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा। नजात **अल्लाह** पाक का हुक्म मानने और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने में है।

आ़शिक़ाने रसूल की म-दनी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" का एक म-दनी क़ाफ़िला.........से आप के अ़लाक़े की.........मस्जिद में आया हुवा है। हम "नेकी की दा'वत" देने के लिये ह़ाज़िर हुए हैं। मस्जिद में अभी दर्स जारी है, दर्स में शिर्कत करने के लिये मेह़रबानी फ़रमा कर अभी तशरीफ़ ले चलिये, हम आप को लेने के लिये आए हैं, आइये तशरीफ़ ले चलिये! (अगर वोह तय्यार न हों तो कहें कि) अगर अभी नहीं आ सकते तो नमाज़े मग़रिब वहीं अदा फ़रमा लीजिये। नमाज़ के बा'द اِنْ شَآءَ اللّٰہ सुन्नतों भरा बयान होगा। आप से दर-ख़्वास्त है कि बयान ज़रूर सुनियेगा। **अल्लाह** पाक हमें और आप को दोनों जहानों की भलाइयां नसीब फ़रमाए, आमीन।

ISBN
0133076

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- अह़मदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिर्ज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- देहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- ह़ैदरआबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net